

नवदशः पाठः अन्नं वै ब्रह्म

वैदिकग्रन्थेषु उपनिषदाम् सर्वोच्चं स्थानमस्ति। उपनिषत्सु वेदानां व्याख्यानं वर्तते। ईशादिप्रमुख-
नवोपनिषत्सु 'तैत्तिरीयोपनिषदः' अयमंशः ग्रहीतः। अस्मिन् अंशे अन्नम् "ब्रह्म" इति उपदिष्टम्।

आनन्दो ब्रह्मेति व्यजानात्। आनन्दाद्भूयेव खल्विमानि भूतानि जायन्ते। आनन्देन जातानि जीवन्ति। आनन्दं प्रयन्त्यभिसंविशन्तीति। सैषा भार्गवी वारुणी विद्या परमे व्योमन् प्रतिष्ठिता। स य एवं वेद प्रतिष्ठति। अन्नवानन्नादो भवति। महान् भवति प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन। महान् कीर्त्या।

अन्नं न निन्द्यात्। तद् व्रतम्। प्राणो वा अन्नम्। शरीरमन्नादम्। प्राणे शरीरं प्रतिष्ठितम्। शरीरे प्राणः प्रतिष्ठितः। तदेतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितम्। स य एतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितं वेद प्रतिष्ठति। अन्नवानन्नादो भवति। महान् भवति प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन। महान् कीर्त्या।

अन्नं न परिचक्षीत। तद् व्रतम्। आपो वा अन्नम्। ज्योतिरन्नादम्। अप्सु ज्योतिः प्रतिष्ठितम्। ज्योतिष्यापः प्रतिष्ठिताः। तदेतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितम्। स य एतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितं वेद प्रतिष्ठति। अन्नवानन्नादो भवति महान् भवति प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन। महान् कीर्त्या।

अन्नं बहु कुर्वीत। तद् व्रतम्। पृथिवी वा अन्नम्। आकाशोऽन्नादः पृथिव्यामाकाशः प्रतिष्ठितः। आकाशे पृथिवी प्रतिष्ठिता। तदेतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितम्। स य एतदन्नमन्ने प्रतिष्ठितं वेद प्रतिष्ठति। अन्नवानन्नादो भवति महान् भवति। प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन। महान् कीर्त्या।

न कंचन वसतौ प्रत्याचक्षीत। तद् व्रतम्। तस्माद्यथा कथा च विधया बह्वन्नं प्राप्नुयात्। आराध्यास्मा अन्नमित्याचक्षते। एतद्वै मुखतोऽन्नराद्धम्। मुखतोऽस्मा अन्नराध्यते। एतद्वै मध्यतोऽन्नराद्धं मध्यतोऽस्मा अन्नराध्यत। एतद्वा अन्ततोऽन्नराद्धम्। अन्ततोऽस्मा अन्नराध्यते। य एवं वेद।

शब्दार्थः

| | | |
|------------------|---|--|
| व्यजानात् | - | निश्चयेन ज्ञातवान् (निश्चय ही जाना) |
| अन्नादः | - | अन्नस्य भोक्ता (अन्न खाने वाला) |
| न परिचक्षीत | - | न निन्दनीयम् (अनिन्दित) |
| न प्रत्याचक्षीत् | - | प्रतिकूलोत्तरं न वक्तव्यम् (विपरीत नहीं बोलना चाहिए) |
| राद्धम् | - | सिद्धम् (आटा को गूथा गया) |
| प्रतिष्ठितम् | - | अवस्थितः (स्थित) |

| | | |
|----------|---|--------------------------|
| कुर्वीत | - | कर्त्तव्यम् (करना चाहिए) |
| कीर्त्या | - | यशसा (यश के द्वारा) |
| आपः | - | जलम् |
| विधया | - | प्रकारेण (प्रकार से) |

अभ्यासः

1. एकपदेन उत्तरत-

- क) भूतानि कस्मात् जायन्ते?
- ख) अन्नवान् कः भवति?
- ग) आपः कुत्र प्रतिष्ठितः?
- घ) आकाशे का प्रतिष्ठिता?
- ङ) यया कया च विधया किं प्राप्नुयात्?

2. एकवाक्येन उत्तरत -

- क) किं व्यजनात्?
- ख) परमे व्योमन् का प्रतिष्ठिता?
- ग) अन्नवान् कथं महान् भवति?
- घ) कं न प्रत्याचक्षीत्?
- ङ) अन्नं कथं राध्यते?

3. रिक्तस्थानानि पूरयत-

- क. आनन्देनजीवन्ति ।
- ख.शरीरं प्रतिष्ठितम् ।
- ग. अन्नंकुर्वीत ।
- घ. पृथिव्यामाकाशः..... ।
- ङ. अप्सुप्रतिष्ठितम् ।

4. यथायोग्यं योजयत -

| अ | ब |
|-------------|------------|
| क) अन्नं न | महान् |
| ख) कीर्त्या | ब्रह्म |
| ग) आनन्दः | विद्या |
| घ) भार्गवी | अन्नादः |
| ङ) अन्नवान् | निन्द्यात् |

5. शुद्धवाक्यानां समक्षम् "आम्" अशुद्धवाक्यानां समक्षं 'न' इति लिखत -

यथा-

| | |
|-------------------------------|----------------------------------|
| अन्नं बहु कुर्वीत | <input type="text" value="आम्"/> |
| अन्नं निन्द्यात् | <input type="text" value="न"/> |
| क) आनन्दः ब्रह्म अस्ति । | <input type="text"/> |
| ख) आनन्देन जातानि न जीवन्ति । | <input type="text"/> |
| ग) शरीरे प्राणः प्रतिष्ठितः । | <input type="text"/> |
| घ) अन्नं परिचक्षीत । | <input type="text"/> |
| ङ) अन्नवानन्नादो भवति । | <input type="text"/> |
| च) आकाशे पृथिवी प्रतिष्ठिता । | <input type="text"/> |

6. निम्नलिखितशब्दानां मूलशब्दं विभक्तिं वचनं च लिखत-

| शब्दः | मूलशब्दः | विभक्तिः | वचनम् |
|---------------|----------|----------|---------|
| यथा- कीर्त्या | कीर्ति | तृतीया | एकवचनम् |
| क) आनन्देन | | | |
| ख) प्रजया | | | |

| | | | | |
|----|------------|-------|-------|-------|
| ग) | प्राणे | | | |
| घ) | अप्सु | | | |
| ङ) | अन्नात् | | | |
| च) | पृथिव्याम् | | | |

7. निम्नलिखितशब्दानां सन्धिविच्छेदं कृत्वा नामानि लिखत -

- क) ब्रह्मेति
- ख) सैषा
- ग) खल्विमानि
- घ) ज्योतिष्यापः
- ङ) बहन्नम्
- च) एतदन्नम्

योग्यताविस्तारः -

- उपनिषदां नामानि लिखत-
- कठोपनिषदः अध्ययनं कुरुत-